B-3 & 4
L- 23
Ethics

साधन साध्य और सम्बन्ध

गांधी के मतानुसार साधन और साध्य में अभिपोज्य (अलग- अलग नही किया जा सकता) संबंध है। एक ही सिक्के के दो पहलू हैं साधन बीज रूप है जबकि साध्य वृक्ष रूप है।

जिस प्रकार बीज में दोष होने पर कलांतर में वृक्ष में भी दोष आ जाता है उसी प्रकार यदि साधन दूषित है तो अन्ततः साध्य भी दूषित हो जाता है इसलिए गांधी साध्य के साथ- साथ साधन की पवित्रता पर बल देते हैं।

अतः जीवन में केवल यह महत्वपूर्ण नही है कि हमने लक्ष्य की प्राप्ति कर ली है बल्कि यह भी देखना आवश्यक है कि किन उपायों से उस लक्ष्य की प्राप्ति की गयी है। वस्तुतः साध्य की पवित्रता साधन की पवित्रता पर निर्भर करती है। गांधी सत्य रूपी साध्य की प्राप्ति हेतु अहिंसा रूपी साधन को स्वीकार करते हैं। सत्याग्रह की अवधारणा भी साधनों की पवित्रता से संबंधित है।

गांधी के धार्मिक विचार :-

गांधी धार्मिक क्षेत्र में रूढ़िवादिता और अंधाविश्वासों का विरोध करते हैं।

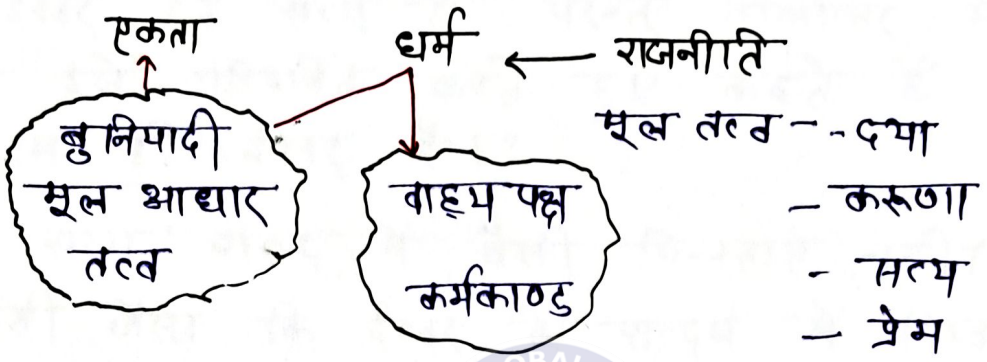

सत्य और अहिंसा के सन्दर्भ में गांधी के विचार :-

गांधी का सम्पूर्ण दर्शन सत्य और अहिंसा रूपी दो स्तम्भों पर टिका है सत्य के प्रति असीम आस्था होने के कारण ही उन्होंने अपनी आत्मकथा "सत्य के साथ मेरे प्रयोग" रचा।

गांधी के मतानुसार सत्य के दो स्वरूप हैं।

(1) सापेक्ष सत्य ⇓ समय और परिस्थिति के अनुसार जो सत्य है वह सापेक्ष सत्य है।

(2) निरपेक्ष सत्य ⇓ जबकि परमात्मा या ईश्वर निरपेक्ष सत्य है।

इस रूप में सत्य का आशय उससे है जो सर्वव्यापी सर्वकालिक और पूर्ण है ऐसे सत्य की खोज करना ही आत्मा का स्वभाव है।

गांधी आरम्भ में यह कहते हैं कि "ईश्वर ही सत्य है" परन्तु कालान्तर में वे इसे परिवर्तित करते हुए कहते हैं कि सत्य ही ईश्वर है।"

'सत्य' शब्द में वैसी भिन्नताएं नहीं दिखाई देती जैसा कि ईश्वर के सन्दर्भ में दिखाई देता है। ईश्वर एक अनेक निर्गुण, सगुण निमित्त या उपादान या दोनों रूपों में हो सकता है। पुनः ईश्वर पर बौद्धिक रूप से संशय किया जा सकता है।

सत्य के सन्दर्भ में विभेद (मतभेद) और संशय नहीं है सत्य आस्तिक एवं नास्तिक दोनों के द्वारा समान रूप से स्वीकार है ऐसे सत्य की प्राप्ति ही जीवन का चर्म आदर्श है इसी सन्दर्भ में गांधी यह कहते हैं कि सत्य ही ईश्वर है इस सत्य की प्राप्ति ईश्वर की प्राप्ति है।

गांधी की वर्तमान में प्रासंगिकता :-

1. भ्रष्टाचार के निवारण में :-

- अस्तेय और अपरिग्रह पर बल दिया।
- ट्रस्टीशिप की अवधारणा।
- नैतिकता युक्त व्यापार।
- साधन की पवित्रता पर बल।
- अपनी आवश्यकताओं को कम करे।

- सामाजिक क्षेत्र में :-

- ऊँच-नीच, छुआछूत का विरोध।
- नारी शिक्षा और सम्मान।
- शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण।
- रोजगार उन्मुख शिक्षा।
- स्वदेशी, स्वच्छता - स्वच्छ भारत अभियान
  - Make in India programme
- नयी शिक्षा नीति में कौशल विकास पर बल।
  - प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना।

- आर्थिक क्षेत्र में :-

- ट्रस्टीशिप - CSR की अवधारणा
- व्यवसायिक सत्यनिष्ठा

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform

राजनीतिक क्षेत्र में :-

- स्वावलंबी ग्रामीण व्यवस्था
- ग्राम पंचायत
- विकेन्द्रीकरण

पर्यावरणीय क्षेत्र में :-

- हमें अपनी आवश्यकताओं को कम करना चाहिए।
- संसाधनों का समुचित एवं व्यवस्थित आवंटन।
- प्रकृति हमारी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है परन्तु किसी के लोभ की नहीं।

धार्मिक क्षेत्र में :-

- साम्प्रदायिकता एवं कट्टरता के क्षेत्र में।
  सर्व धर्म समभाव की भावना।
- नैतिकता के निर्धारण में।
- जब कोई स्पष्ट नियम या कानून नहीं हों और तत्काल निर्णय लेने की आवश्यकता हो तो फिर हमें अपनी अंतरात्मा के अनुसार कार्य करना चाहिए।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- गांधी की प्रासंगिकता विनोबा भावे की इस कथन में दिखाई देती है कि " आज नही तो कल दुनियों को अहिंसा का पाठ पढ़ाना होगा। आज जो हमारे साथ नही है वे कल हमारे साथ आएंगे।

एक ऐसा जमाना आएगा कि सारे समाज को शान्ति की प्यास लगेगी, सारा जमाना सोचेगा कि शान्ति में ही शान्ति है सारा समाज न भय के कारण प्यास की पूर्ति के लिए शान्ति चाहेगा तब सर्वोदय होगा और गांधी याद आयेंगे।

(गाँधा का कथन विनोबा भावे द्वारा लिखा गया है)

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

जवाहर लाल नेहरू

राष्ट्रवाद

उग्र राष्ट्रवाद (समर्थन नहीं करते थे)

परिणाम

- तानाशाही
- साम्राज्यवादी
- अशान्तिदायक
- शोषणकारी
- युद्ध की स्थिति

उदार राष्ट्रवाद (समर्थन करते थे)

परिणाम

- अन्य राष्ट्रों एवं उनकी सभ्यता एवं संस्कृति का भी आदर
- सह-अस्तित्व का भाव

धार्मिक राष्ट्रवाद (समर्थन नहीं करते थे)

कारण :-

- असहिष्णुता
- वैमनस्य
- कट्टरता
- अविश्वास को बढ़ाता
- प्रतिक्रियावादी स्थिति
- संघर्ष एवं तनाव की स्थिति

पंथनिरपेक्ष राष्ट्रवाद (समर्थन करते हैं)

- सांस्कृतिक बहुलता का समर्थन
- धार्मिक सद्भाव में सहायक परन्तु धार्मिक रूढ़िवादिताओं का विरोध

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

समाजवाद (केन्द्रीय मूल्य + समानता)

मार्क्सवादी (समर्थन (X))

- एक स्तर पर सर्वहारा वर्ग की तानाशाही स्वीकार करता है।
- लक्ष्य प्राप्ति हेतु हिंसात्मक साधनों का भी सहारा।

लोकतांत्रिक समर्थन (✓)

- लोकतांत्रिक साधनों जैसे- संवैधानिक सुधार, प्रगतिशील, करारोपण आदि के माध्यम से समाजवाद की स्थापना का लक्ष्य
- संसदीय लोकतांत्रिक व्यवस्था।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

सामाजिक क्षेत्र में

समर्थन (✓) वैज्ञानिक मनोवृत्ति

लक्षण :-

- खुला मन,
- तार्किक संदेह
- जिज्ञासु प्रवृत्ति
- प्रश्न पूछने की प्रवृत्ति
- दूरदर्शिता
- नवाचार
- नवीन तथ्यों को ग्रहण करने की स्वीकार्यता

समर्थन (✓) वैज्ञानिक मानववाद

- मानव की गरिमा और महत्ता को बढ़ावा
- मानव की क्षमता में विश्वास

- सामाजिक समस्याओं के निदान में वैज्ञानिक मनोवृत्ति की महत्वपूर्ण भूमिका है।

- मानवीय समस्याओं का समाधान परस्पर सहयोग और विज्ञान की सहायता से संभव
- वे मानते थे कि अलौकिक सत्ता के साथ पर मानव विज्ञान की सहायता लेकर अपनी समस्याओं का समाधान कर सकता है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR